राजद समाचार

आजादी, समानता और भाईचारा

राष्ट्रीय जनता दल का मासिक मुखपत्र

अंक–39 अक्टूबर, 2024 सहयोग राशि–40 रुपये

इस बार

पार्टी गतिविधियां	
1990 के पहले और बाद का बिहार- राजेश यादव	03
स्मार्ट मीटर गरीबों के लिए स्मार्ट चीटर है- मुकुंद सिंह	08
सम-सामयिक	
शराबबंदी के नशे में चूर नीतीश- महेंद्र सुमन	10
भूमि सुधार : सरकारी हुड़दंग का नमूना- डॉ. दिनेश पाल	12
स्मार्ट मीटर गरीब उपभोक्ताओं के लिए अभिशाप- नरेश हरिहर	14
स्मार्ट मीटर : सरकारी लूट का पर्याय- तेजस्वी प्रसाद यादव	15
नीतीश का बाढ़-प्रबंधन एवं नियंत्रण मॉडल ध्वस्त- अमरनाथ	16
राज-काज की सांप्रदायिकता	
बिहार में सुशासन और रामराज की असलियत- राम कवीन्द्र सिंह	18
मुजफ्फरपुर रेपकांड : संघ का एक और कुत्सित प्रयोग- हेमंत कुमार	19
16 प्रतिशत से 80 प्रतिशत आबादी को कैसा डर- शिवानंद तिवारी	22
हरियाणा चुनाव परिणाम पर- सुबोध वर्मा	23
फासीवादी ताकतों की चुनौती- सीताराम येचुरी	25
पठन-पाठन/ पुरस्कृत लेखक चंद्रकिशोर जायसवाल का आत्म वक्तव्य	33
वरिष्ठ लेखक चंद्रकिशोर जायसवाल से कला रॉय की बातचीत	34
श्रद्धांजलि/ सीताराम येचुरी पर- अरुण माहेश्वरी	36
साईबाबा की न्यायिक मौत पर- परांजॉय गुहा ठाकुरता	38
कवि का पन्ना/ रेनू यादव	40

सम्पादक

अरुण आनंद

सहयोग

कवि जी/ डॉ. दिनेश पाल/ साकिब अशरफी

जगदानन्द सिंह

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-01 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित

राजद समाचार की ईमेल आईडी

samacharrjd@gmail.com

भाजपा की हिन्दू कलंक यात्रा

भारत के केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह बिहार से 'हिन्दू स्वाभिमान यात्रा' का आगाज कर चुके हैं। उनकी यह यात्रा भागलपुर से शुरू हुई है जो कटिहार होते हुए अररिया और किशनगंज तक जाएगी। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य हिन्दुओं को एकत्रित करना है ताकि वे आपस में बंटे नहीं। नहीं तो उनके अपने ही पड़ोसी मुस्लिम आबादी उन्हें काट डालेगी। बिहार के जिस सीमांचल से उनकी यह स्वाभिमान यात्रा शुरू हुई है उसके 3 लोकसभा सीटों पर भाजपा-एनडीए की हार हुई है। माना जाता है कि ये क्षेत्र मुस्लिम बहुल हैं और गिरिराज सिंह इस यात्रा के बहाने हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ गोलबंद करना चाहते हैं ताकि आनेवाले बिहार विधानसभा चुनाव में वे इसकी फसल काट सकें।

भाजपा की यह सांप्रदायिक मुहिम नयी नहीं है। विगत लोकसभा चुनाव का प्रसंग हो या फिर झारखंड का चुनाव, जहां की चुनावी रैलियों में हिमंता बिस्वा शर्मा, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री सब-के-सब हर जगह मुस्लिम कौम के खिलाफ हिंसक और भड़काऊ भाषण दिये जा रहे हैं। यह सब वे लोग कर रहे हैं जिनके ऊपर देश चलाने की जिम्मेदारी है। लेकिन यहां रक्षक ही भक्षक बन इस देश की अखंडता को सरेआम धूल-धूसरित करने पर आमादा हैं। आश्चर्यजकनक पहलू यह कि उनके इस देश विरोधी कृत्य पर हमारी न्यायपालिका, शासन-प्रशासन और मीडिया सब में एक किस्म की चुप्पी है। ऐसा लगता है उनके इस अभियान में इन संस्थाओं का भाजपा और आरआरएस के साथ गहरा संश्रय है इसलिए इन कुकृत्यों पर न तो कहीं मुकदमा दायर होता है न कोर्ट द्वारा स्वतः संज्ञान लिया जाता है। सच तो यह है कि भाजपा पैदाइशी लोकतंत्र और संविधान विरोधी पार्टी है, यह भारत को 'बनाना लोकतंत्र' के रूप में स्थापित करना चाहती है। इन कृत्यों के माध्यम से इसने भारत में फासीवाद का एक मुकम्मल स्वरूप अख्तियार कर लिया है।

गिरिराज एक ऐसी कौम को संगठित करने की बात कर रहे हैं, जो खुद ही असंख्य जातियों और अमानुषिक परम्पराओं में गर्क है, जहां सदियों से वर्चस्व प्राप्त मुट्ठी भर जातियों द्वारा एक

बड़ी आबादी को जूते की नोक पर रखने की परम्परा कायम हो, महिलाओं को दोयम दर्जे की नागरिकता दी गई हो, जातीय, लैंगिक और साम्प्रदायिक आधार पर जो कौमें सदियों तक संचालित होती रहीं हों- गिरिराज उन्हें छद्म हिन्दू एकता का सब्जबाग दिखलाकर मुसलमानों के खिलाफ खड़ा होने की अपील कर रहे हैं कि वे अगर संगठित नहीं हुए तो कटेंगे। भाई तुम जो इन्हें मुसलमानों के खिलाफ संगठित होने और त्रिशूल चलाने का ज्ञान बांट रहे हो, पहले अपने यहां इन्हें सम्मानजनक नागरिक जीवन का अधिकार तो दिलवाओ, सदियों से एक बड़ी आबादी के साथ कुत्ते-बिल्ली से भी खराब व्यवहार करने की तुम्हारी जो मनुस्मृति की आचार संहिता कायम है, उसमें तो बदलाव लाओ; तब उन्हें संगठित करो, तो कोई बात बने। लेकिन यह न करके आप देश में नफरत का बीज बो रहे हो। गिरिराज यहां की बहुजन जमात तुम्हारे छद्म को जान चुकी है, इसलिए वह तुम्हारे बहकावे में आने से रही। हमारे नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने बहुत सही कहा कि सीमांचल के इलाके में अल्पसंख्यक और अति पिछड़े लोगों की बड़ी आबादी है, वहां पलायन है, गरीबी है, लेकिन गिरिराज महंगाई मिटाने की बात नहीं कर रहे, पलायन हटाने की बात नहीं कर रहे, वहां वे एक कौम को दूसरे से लड़ाने का काम कर रहे हैं, हमारे कार्यकर्ता बिहार के माहौल को खराब नहीं होने देंगे।

इस पूरे प्रकरण पर नीतीश कुमार की चुप्पी भी कम घातक नहीं है। उन्होंने भाजपा के सांप्रदायिक एजेंडे के सामने घुटने टेक दिया है। अतीत में रेल मंत्री रहते उन्होंने गुजरात हिंसा में जिस तरह से मोदी को क्लीन चिट दिया था, वह उदाहरण आपको याद होगा। उसके बाद भी भाजपा द्वारा संसद के अंदर जितने देश विरोधी साम्प्रदायिक एजेंडा लाये गए, लगभग सब में उनका खुला समर्थन भाजपा के साथ रहा है। हद तो तब हो गई जब एनडीए की बैठक में भी गिरिराज सिंह उपस्थित रहे और मुख्यमंत्री ने उनके विरूद्ध एक लब्ज नहीं खोला। उनका यह आत्मसमर्पण उनके वैचारिक दारिद्र को बयां करता है। अगर इसी तरह सांप्रदायिक ताकतें बिहार में अपनी मनमानी करती रहीं तो बिहार को भी भाजपा के गुजरात और उतर प्रदेश मॉडल का हिन्दू राज्य बनते देर नहीं लगेगी। यहां की बहुसंख्यक आबादी इन्हीं राज्यों की तरह विकास का रास्ता छोड़ धर्मांध हो उठेगी और बिहार में भी बहराइच की तरह हिन्दू कौमें मुसमानों के विरूद्ध हिंसक गतिविधियों को अंजाम देती नजर आएंगी।

गिरिराज जैसे उन्मादी तत्व, जिन्हें हिन्दू धर्म और उनके प्रतीकों का कोई ज्ञान नहीं है, इसके स्वयंभू के रूप में मीडिया द्वारा प्रोजेक्ट किये जा रहे हैं। जिस महादेव शंकर का वे अपनी कथित हिन्दू स्वाभिमान यात्रा के पहले दर्शन कर रहे हैं, उनके महत्व को भी वह नहीं जानते। ऐसे जाहिल लोग महादेव को समझ भी नहीं सकते। जिस महादेव का परिवेश सांप, बिच्छू, कनगोजर जैसे भांति-भांति के प्रतिकूल जीवों से निर्मित हो, जो स्वयं हलाहल पीकर समाज में अमृत की धारा प्रवाहित करता हो, वह कैसे किसी कौम के जनसंहार का आह्वान करेगा, लेकिन इस दो टके के दंगाई ने आदिदेव नीलकंठधारी शंकर को भी घृणा का प्रतीक बना दिया।

गिरिराज की यह यात्रा ऐसे समय में निकाली गई है जब झारखंड और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की तैयारियां अपने शबाब पर हैं और बिहार, उत्तर प्रदेश में भी उप-चुनाव का शंखनाद हो चुका है। झारखंड में हिमंता बिस्वा शर्मा से लेकर निशिकांत दुबे, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री सब-के-सब इसी सांप्रदायिक पीच पर खेल रहे हैं ताकि उनके कामों पर उंगली न उठाकर लोग इसी हिन्दू-मुस्लिम नैरेटिव में उनके कमल को खिलने का एक और अवसर दे दें, लेकिन यह आसान नहीं है। झारखंड ने इनके आदिवासी विरोधी शासन की अमानुषिकता देखी है और यह भी देखा है कि किस तरह भाजपा शासन में यह प्रदेश आदिवासी विरोध और कॉरपोरेट की लूट और भ्रष्टाचार का प्रतीक बनकर उभरा था। पत्थलगढ़ी आंदोलन में भाजपा सरकार द्वारा जमीन लूट के लिए जिस तरह आदिवासियों पर जुल्म ढाये गये, उसकी स्मृति अभी ताजा है। झारखंड औपनिवेशिक काल से ही संघर्षों की भूमि रहा है, वहां की आदिवासी कौम इनकी हर बाजीगरी को समझती है, इसीलिए प्रतीक के तौर पर चाहे चम्पई सोरेन उनके साथ चले जाएं या कि मंडल मुर्मू को भाजपा की सदस्यता दिलवा दी जाए- इन सब चीजों से वहां बहुत फर्क पड़नेवाला नहीं है। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये का मामला उठाकर आदिवासियों की घटती संख्या को मुद्दा बना रहा है। झारखंड की बहादुर जनता इनकी हकीकत को जानती है, इसलिए इसबार वहां इनकी दाल नहीं गलनेवाली। तथ्य बताते हैं कि झारखंड में आजादी के पहले से आदिवासियों का आउट माइग्रेशन और दूसरे प्रांतों खासकर बिहार-यूपी से माइग्रेशन होता रहा है और बाहर से आनेवाली यही आबादी यहां के अच्छे-खासे संसाधनों पर काबिज है। कहने की जरूरत नहीं है कि इन दिकुओं में बहुसंख्यक हिन्दू हैं। महाराष्ट्र में भी भाजपा की हालत झारखंड ये अलग नहीं है। चुनाव के पहले वहां एनडीए में और स्वयं भाजपा के अंदर जिस तरह की संवादहीनता उभरी है, वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वहां भी वे बुरी तरह पिटनेवाले हैं। जाहिर है अंतिम क्षण तक वह किसी भी तरह से इन राज्यों में साम्प्रदायिक जहर घोलने का हर वह अवसर इस्तेमाल करेंगे। 'बंटेंगे तो कटेंगे', 'एक हैं तो सेफ हैं', जैसे उनके कोर नफरती और हिंसक नारे सत्ता में उनकी वापसी का एकमात्र एजेंडा बन गया है।

बिहार में 4 विधान सभा क्षेत्रों- बेलागंज, इमामगंज, तरारी और रामगढ़ में उप-चुनाव की घोषणा हो चुकी है। इसमें महागठबंधन से राजद के 3 और भाकपा माले के एक उम्मीदवार खड़े हैं। हमें उम्मीद है बिहार की जनता महागठबंधन दलों को वोट करके उन्हें जीताएगी और इससे देश में सांप्रदायिक सौहार्द का वातावरण निर्मित करने की कोशिशों को पुख्ता आधार मिलेगा।

अरुण आनंद

■